पात्र-परिचय

पुरुष-पात्र

1. विंदुसार— मगध-सम्राट्
2. अशोक— विंदुसार का पुत्र तथा बाद में मगध का सम्राट्
3. वीतशोक— विदुसार का पुत्र और बाद में बौद्ध भिक्षुक
4. सुसीम— विंदुसार का पुत्र
5. तिष्य— विदुसार का पुत्र
6. राधागुप्त— अशोक का मित्र और बाद में उसका युद्धमंत्री
7. खल्लातक— विंदुसार का महामात्य और बाद में अशोक का महामात्य
8. बुद्धिसेन— राजविदूषक
9. राजवैद्य— मगध का राजवैद्य
10. राज-ज्योतिषी— उज्जयिनी का राजज्योतिषी
11. चंडगिरि— विंदुसार का महाबलाधिकृत और बाद में मगध का कोट-रक्षपाल
12. महास्थविर उपगुप्त—नालंदा-बिहार के प्रधान

(सैनिक, दूत, प्रतिहार, बौद्धभिक्षु इत्यादि)

स्त्री-पात्र

1. शकरानी— विंदुसार की शकरानी
2. महादेवी या देवी—अशोक की पत्नी, उज्जयिनी की राजकुमारी
3. लतिका— महादेवी की सखी

स्थान

1. मगध का राजउपवन
2. तक्षशिला का रणक्षेत्र
3. उज्जयिनी का राज-उपवन
4. पाटलिपुत्र का रणक्षेत्र
6. कलिंग का रणक्षेत्र
7. नालंदा का बौद्ध विहार

समय— अशोक के राज्यारोहण के कुछ समय पूर्व से आरंभ होकर आठ वर्ष बाद, कलिंग-विजय-अभियान के समय नाटक, समाप्त होता है।